10

कोर्स 'बी'

# व्याकरण परिचय

# पूरक-पुस्तिका

**[Based on Latest CBSE Syllabus (2020-2021)]**

## विषय-सूची

1. पदबंध 2. अलंकार 3. लघु कथा-लेखन

*Published by*:

**Full Marks Pvt Ltd**

(Progressive Educational Publishers)

4238A/1, Ansari Road, Daryaganj
New Delhi-110002

**Phone:** 011-40556600 (100 Lines)
**Fax:** 011-40556688
**Website:** www.fullmarks.org
**E-mail:** info@fmpl.in

# कक्षा दसवीं हिंदी 'ब'–परीक्षा हेतु पाठ्यक्रम विनिर्देशन 2020-21

| परीक्षा भार विभाजन | | | | | |
|---|---|---|---|---|---|
| | विषयवस्तु | | | उप भार | कुल भार |
| 1 | अपठित गद्यांश (चिंतन क्षमता एवं अभिव्यक्ति कौशल पर अति लघूत्तरात्मक एवं लघूत्तरात्मक प्रश्न पूछे जाएँगे) | | | | |
| | • | अपठित गद्यांश (100 से 150 शब्दों के) (2×4) (1×2) | | 10 | 10 |
| 2 | व्याकरण<br>पाठ्यपुस्तक में दिए गए भाषा-अध्ययन के आधार पर (1×16) | | | | |
| | 1 | **पदबंध** (2 अंक) | | 02 | 16 |
| | 2 | रचना के आधार पर वाक्य रूपांतर (3 अंक) | | 03 | |
| | 3 | समास (4 अंक) | | 04 | |
| | 4 | **अलंकार** (अनुप्रास, यमक, उपमा, रूपक, अतिशयोक्ति, मानवीकरण) (3 अंक) | | 03 | |
| | 5 | मुहावरे (4 अंक) | | 04 | |
| 3 | पाठ्यपुस्तक स्पर्श भाग-2 व पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-2 | | | | |
| | अ | गद्य खंड | | 11 | 28 |
| | | 1 | पाठ्यपुस्तक स्पर्श के गद्य पाठों के आधार पर लघु प्रश्न (2×3) | 06 | |
| | | 2 | पाठ्यपुस्तक स्पर्श के निर्धारित पाठों (गद्य) पर एक निबंधात्मक प्रश्न (5×1) (विकल्प सहित) | 05 | |
| | ब | | काव्य खंड | 11 | |
| | | 1 | पाठ्यपुस्तक स्पर्श के काव्य खंड के आधार पर लघु प्रश्न (2×3) | 06 | |
| | | 2 | कविता की समझ पर आधारित एक निबंधात्मक प्रश्न (5×1) (विकल्प सहित) | 05 | |
| | स | | पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन भाग-2 | 06 | |
| | | | पूरक पाठ्यपुस्तक संचयन के निर्धारित पाठों से दो प्रश्न पूछे जाएँगे (3×2) | 06 | |
| 4 | लेखन | | | | 26 |
| | अ | संकेत-बिंदुओं पर आधारित समसामयिक एवं व्यावहारिक जीवन से जुड़े हुए किन्हीं तीन विषयों में से किसी एक विषय पर 80 से 100 शब्दों में अनुच्छेद (6×1) | | 06 | |
| | ब | औपचारिक विषय से संबंधित पत्र। (5×1) (विकल्प सहित) | | 05 | |
| | स | व्यावहारिक जीवन से संबंधित विषयों पर आधारित 30-40 शब्दों में सूचना-लेखन (5×1) (विकल्प सहित) | | 05 | |
| | द | विषय से संबंधित 25-50 शब्दों के अंतर्गत विज्ञापन-लेखन। (5×1) (विकल्प सहित) | | 05 | |
| | इ | **लघु कथा-लेखन** – दिए गए प्रस्थान बिंदु के आधार पर 100-120 शब्दों में लघु कथा-लेखन (5×1) (विकल्प सहित) | | 05 | |
| | | **कुल** | | | 80 |

**निर्धारित पुस्तकें:**

1. **स्पर्श, भाग-2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण
2. **संचयन, भाग-2,** एन.सी.ई.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा प्रकाशित नवीनतम संस्करण

**नोट:** निम्नलिखित पाठ केवल पठन के लिए।

| | |
|---|---|
| स्पर्श (भाग-2) | • मधुर-मधुर मेरे दीपक जल • तीसरी कसम के शिल्पकार शैलेंद्र<br>• गिरगिट |

# 1 पदबंध (Phrase)

कक्षा–IX में आपको 'शब्द और पद' के बारे में बताते हुए यह कहा गया था कि 'शब्द' की सत्ता वाक्य से बाहर होती है। अतः 'शब्द' भाषा की स्वतंत्र इकाई है और 'शब्द' जब वाक्य में आ जाता है तब उसे शब्द नहीं कहते, **'पद'** कहते हैं। वाक्य में प्रयुक्त शब्द को 'पद' इसलिए कहते हैं क्योंकि वाक्य में आकर यह वाक्य के नियमों में बँध जाता है तथा कोई–न–कोई **'प्रकार्य'** (function) करने लगता है। उदाहरण के लिए 'मीरा' और 'सुरेश' दोनों 'व्यक्तिवाचक संज्ञा' शब्द हैं, पर वाक्य में वे क्या प्रकार्य करते हैं, इसके आधार पर उनके 'पद' का निर्धारण किया जाता है; जैसे–

1. **मीरा** ने **सुरेश** को किताब दी।
2. **सुरेश** ने **मीरा** को किताब दी।

वाक्य–1 में 'मीरा' संज्ञा 'कर्ता' का कार्य कर रही है तथा 'सुरेश' संज्ञा 'अप्रत्यक्ष कर्म' का जबकि वाक्य–2 में 'सुरेश' 'कर्ता' का कार्य कर रहा है और 'मीरा' 'अप्रत्यक्ष कर्म' का। अतः ध्यान रखिए, वाक्य में **'पद'** का महत्व उसके 'प्रकार्य' के कारण होता है।

## पदबंध

'पदबंध' शब्द दो शब्दों– 'पद' तथा 'बंध' से मिलकर बना है। 'पद' का अर्थ आप समझ ही चुके हैं। 'बंध' शब्द का अर्थ है–'बँधा हुआ' या बंधन युक्त'। वास्तव में 'पदबंध' के अंतर्गत एक से अधिक पद एक साथ बँधकर या बंधन युक्त होकर आते हैं और वही प्रकार्य करते हैं जो प्रकार्य किसी एक पद द्वारा किया जा रहा था। इस बात को समझने के लिए निम्नलिखित वाक्यों पर ध्यान दीजिए–

1. **बच्चा** केला खा रहा है।
2. **शरारती बच्चा** केला खा रहा है।
3. **आपका शरारती बच्चा** केला खा रहा है।

वाक्य–1 में **'बच्चा'** संज्ञा पद है और 'कर्ता' का प्रकार्य कर रहा है। इसके स्थान पर हम **'शरारती बच्चा'** या **'आपका शरारती बच्चा'** भी रख सकते हैं क्योंकि एक से अधिक पदों का समूह भी वाक्य में वही 'प्रकार्य' (function) करता है, जो अकेला 'बच्चा' पद कर रहा था' (देखिए वाक्य–2 तथा वाक्य–3), ध्यान रखिए, किसी एक इकाई के स्थान पर किसी दूसरे का 'रिप्लेसमेंट' (replacement) तभी हो सकता है जब दोनों समान प्रकार्य कर रहे हों।

इसी तरह से ऊपर के वाक्यों में हम 'केला' पद के स्थान पर एक से अधिक पदों वाली रचना जैसे 'मीठा केला' या 'मीठा पका केला' को भी रख सकते हैं; जैसे–

4. बच्चा **पका केला** खा रहा है।
5. बच्चा **मीठा पका केला** खा रहा है।

इसका अर्थ यही है कि 'पका केला' तथा 'मीठा पका केला' भी वही प्रकार्य कर रहे हैं जो वाक्य-1 में 'केला' पद कर रहा था।

इस तरह आपने देखा कि कोई भी 'शब्द' वाक्य में आकर इसलिए 'पद' कहलाता है क्योंकि वह कोई-न-कोई प्रकार्य करता है। अब यदि वही प्रकार्य 'एक से अधिक पदों का समूह या बंध करता है तो उसे 'पदबंध' कहते हैं।

## परिभाषा

पदों के उस बंध या समूह को 'पदबंध' कहते हैं, जो वाक्य में वही प्रकार्य करता है जो प्रकार्य किसी एक पद के द्वारा किया जा रहा था।

**पदबंध : भेद-प्रभेद**

वाक्य में मुख्य रूप से चार प्रकार के पदबंध आते हैं–

1. संज्ञा पदबंध
2. विशेषण पदबंध
3. क्रिया पदबंध
4. क्रियाविशेषण पदबंध

## 1. संज्ञा पदबंध:

**जो पदबंध वाक्य में 'संज्ञा' या 'सर्वनाम' पद के स्थान पर आ सकते हैं, 'संज्ञा पदबंध' कहे जाते हैं।**

इसका अर्थ यही है कि 'संज्ञा पदबंध' वाक्य में वही प्रकार्य करता है, जो प्रकार्य किसी 'संज्ञा पद' के द्वारा किया जाता है। देखिए निम्नलिखित उदाहरण–

| रेखांकित पद–'संज्ञा पद' | रेखांकित पदबंध–'संज्ञा पदबंध' |
|---|---|
| 1. मीरा अध्यापिका है। | 1. मीरा हिंदी की अध्यापिका है। |
| 2. लड़कियाँ चली गईं। | 2. नृत्य करने वाली लड़कियाँ चली गईं। |
| 3. मुझे ट्रेन से जाना है | 3. मुझे मुंबई वाली ट्रेन से जाना है। |
| 4. मैंने किताबें बच्चों को दे दीं। | 4. मैंने अपनी किताबें बच्चों को दे दीं। |
| 5. वह कर भी क्या सकता है। | 5. बेचारा वह कर भी क्या सकता है। |

आपने देखा कि 'संज्ञा पद' को 'संज्ञा पदबंध' बनाने का कार्य 'विशेषण पद/पदों' द्वारा ही किया जाता है।

**शिक्षण निर्देश:** छात्रों को बताएँ कि 'संज्ञा' तथा 'सर्वनाम' मूलत: एक ही हैं क्योंकि वे समान कार्य करते हैं। हालांकि कुछ किताबों में भ्रमवश इसे 'सर्वनाम पदबंध' कहा गया है जबकि आधुनिक भाषा विज्ञान उनको भी 'संज्ञा पदबंध' के अंतर्गत ही रखता है। अत: अलग से 'सर्वनाम पदबंध' जैसे भेद की आवश्यकता नहीं है।

## 2. विशेषण पदबंध:

संज्ञा पदबंध की रचना पर ध्यान दीजिए, संज्ञा पदबंध में से यदि 'संज्ञा पद' को हटा दें तो जो शेष बचता है वह 'विशेषण पद' होता है। जैसे–**छोटा बच्चा** बहुत बीमार है' वाक्य में 'छोटा बच्चा' संज्ञा पदबंध है। इसमें से यदि 'बच्चा' संज्ञा पद को हटा देते हैं तो 'छोटा' विशेषण पद शेष रह जाता है।

इस तरह–

वाक्य में संज्ञा य सर्वनाम पदों की विशेषता जब अकेला एक विशेषण पद बताता है तब वह **विशेषण पद** कहलाता है, लेकिन जब यही कार्य 'विशेषणों के समूह या बंध' द्वारा किया जाता है तो उस पदबंध को **विशेषण पदबंध** कहते हैं; जैसे–

| रेखांकित पद–'विशेषण पद' | रेखांकित पदबंध–'विशेषण पदबंध' |
|---|---|
| 1. मेरा बेटा कल आ रहा है। | 1. मेरा छोटा बेटा कल आ रहा है। |
| 2. दीपा एक डॉक्टर है। | 2. दीपा एक मशहूर डॉक्टर है। |
| 3. मैंने एक कार खरीदी। | 3. मैंने एक नई कार खरीदी। |

अत: विशेषण पदबंध भी वाक्य में वही कार्य करते हैं जो कार्य अकेला 'विशेषण पद' करता है।

## 3. क्रिया पदबंध

कोई भी 'क्रिया' शब्द जब वाक्य में प्रयुक्त होता है तब उसमें 'सहायक क्रिया' (काल, पक्ष, वृत्ति, वाच्य, लिंग, वचन आदि) के प्रत्यय जुड़ते हैं। इस तरह 'मुख्य क्रिया' तथा 'सहायक क्रिया' से युक्त पूरी रचना को **क्रिया पदबंध** ही कहते हैं। अत: वाक्य में प्रयुक्त 'क्रिया' सदैव पदबंध के रूप में ही होती है। देखिए, क्रिया पदबंध के कुछ उदाहरण–

1. बच्चे मैदान में दौड़ रहे हैं।
2. मैं रोज़ फ़िल्म देखने जाया करता था।
3. माता जी से खाना नहीं बनाया जाता।
4. वह अकसर फ़ोन कर लिया करती है।
5. वह नौकर से कपड़े धुलवा रही है।
6. आप वहाँ जाकर बैठिए।

## 4. क्रियाविशेषण पदबंध

आप यह जानते हैं कि वाक्य में प्रयुक्त होकर 'क्रियाविशेषण पद' क्रिया की विशेषता बताने का कार्य करते हैं। यदि किसी अकेले 'क्रियाविशेषण पद' के स्थान पर एक से अधिक क्रियाविशेषण पद मिलकर 'पदबंध' के रूप में आते हैं और क्रिया की विशेषता बताने का कार्य करते हैं तो उस पदबंध को **क्रियाविशेषण पदबंध** कहा जाता है।

अत: **वह 'पदबंध' जो 'क्रियाविशेषण पद' के स्थान पर प्रयुक्त होकर वही कार्य करता है जो अकेला एक 'क्रियाविशेषण पद' कर रहा था तब उस पदबंध को 'क्रियाविशेषण पदबंध' कहते हैं।**

**देखिए उदाहरण–**

| रेखांकित पद–'क्रियाविशेषण पद' | रेखांकित पदबंध–'क्रियाविशेषण पदबंध' |
|---|---|
| 1. वह धीरे लिख रही है। | 1. वह बहुत धीरे लिख रही है। |
| 2. मैं कल पहुँचूँगा। | 2. मैं कल चार बजे पहुँचूँगा। |
| 3. सब लोग मंदिर गए हैं। | 3. सब लोग पुराने गणेश मंदिर गए हैं। |
| 4. दावत में उसने बहुत खाया। | 4. दावत में उसने बहुत ज़्यादा खाया। |

## ध्यान देने योग्य बातें

- वाक्य में प्रयुक्त शब्द इसलिए 'पद' कहलाते हैं क्योंकि वे वाक्य में जाकर कोई-न-कोई प्रकार्य करते हैं।
- वाक्य के किसी एक पद के स्थान पर यदि एक से अधिक पदों का समूह वही कार्य करे जो अकेला एक पद कर रहा था तो पदों के ऐसे समूह को 'पदबंध' कहते हैं।
- पदों का ऐसा बंध या समूह जो वाक्य में 'संज्ञा पद' के स्थान पर प्रयुक्त होकर वही कार्य करता है जो अकेला एक 'संज्ञा पद' कर रहा था तो 'पदों के उस 'बंध' को 'संज्ञा पदबंध' कहते हैं।
- संज्ञा पदबंध की रचना विशेषण पदों के योग से होती है।
- पदों का ऐसा बंध जो किसी विशेषण पद के स्थान पर प्रयुक्त होकर वही कार्य करता है जो उस अकेले विशेषण पद द्वारा किया जा रहा था तो उसे 'विशेषण पदबंध' कहते हैं।
- वाक्य में प्रयुक्त क्रिया हमेशा 'पदबंध' के रूप में ही होती है, अतः उसे 'क्रिया पदबंध' ही कहा जाता है।
- क्रियाविशेषण पद को जो पदबंध स्थानापन्न करके उसी कार्य को करता है, जिसे अकेला 'क्रियाविशेषण पद' कर रहा था तो उसे 'क्रियाविशेषण पदबंध' कहते हैं।

## अभ्यास-कार्य

**1. पद और पदबंध का अंतर स्पष्ट कीजिए।**

**2. पदबंध के भेद-प्रभेदों के नाम लिखिए तथा प्रत्येक के दो-दो उदाहरण दीजिए।**

**3. सही अथवा ग़लत के निशान लगाइए।**

1. शब्द भाषा की स्वतंत्र इकाई है तथा उसकी सत्ता वाक्य से बाहर होती है। ☐
2. वाक्य में प्रयुक्त पद को शब्द भी कह सकते हैं। ☐
3. वाक्य में पदबंध भी वही प्रकार्य करते हैं जो प्रकार्य पदों के द्वारा किया जाता है। ☐

4. संज्ञा पदबंध की रचना प्रायः संज्ञा पद के साथ विशेषण पद के जोड़ने से होती है। ☐
5. क्रियाविशेषण पदबंध क्रिया की विशेषता बताता है। ☐

**4. रेखांकित पदबंधों के नाम लिखिए।**

1. झूठ बोलने वाले लोगों को दंड मिलना चाहिए। .....
2. तुम इतना धीरे-धीरे क्यों लिख रही हो? .....
3. बेचारा वह किसी से कुछ न कह पाया। .....
4. काली कमीज वाला लड़का चला गया। .....
5. परिश्रम से जी चुराने वाले बच्चों को कोई पसंद नहीं करता। .....
6. मंदिर के बाहर बहुत भीड़ इकट्ठी हो गई है। .....
7. सब लोग रात को दस बजे अपने-अपने घर चले गए थे। .....
8. मैंने जंगल में एक भयानक अजगर देखा। .....
9. माँ ने पके-पके पीले आम खरीदे। .....
10. हमेशा झूठ बोलने वाले तुम कभी नहीं सुधर सकते। .....

**5. नीचे दिए गए उदाहरण के अनुसार रेखांकित उपवाक्यों को पदबंधों में बदलिए।**

**उदाहरणः** जो सच बोलता है उसे सब प्यार करते हैं।
सच बोलने वाले को सब प्यार करते हैं।

1. जिस लड़के ने परिश्रम किया उसे सफलता मिली।

   .....

2. जो लोग मंदिर गए थे वे अभी तक नहीं लौटे।

   .....

3. जो दूध लेकर आया है वह मेरा भाई है।

   .....

4. जो भीख माँगते हैं उन्हें ऐसा करने से रोकिए।

   .....

5. जिसे अपने देश से प्यार है वह यह झंडा उठाए।

   .....

6. जिस डॉक्टर ने पिता जी का इलाज किया वह खुद बीमार हो गए हैं।

   .....

❑❑❑

# 2 अलंकार
## (Figure of Speech)

अलंकार शब्द की रचना **दो शब्दों के मेल** से हुई है– '**अलं**' तथा '**कार**'। '**अलं**' का अर्थ है–'**शोभा**' या '**सौंदर्य**'। '**कार**' शब्द 'कर्' धातु से बना रूप है, जिसका अर्थ है–'**करनेवाला**'। इस तरह **अलंकार** शब्द का अर्थ हुआ–'**शोभा करनेवाले**'। अर्थात वे उपादान जो 'शोभा' या 'सौंदर्य' उत्पन्न कर देते हैं। संस्कृत के अलंकारवादी आचार्य; जैसे–भामह, दंडी, रुद्रट आदि ने अलंकारों को इसी अर्थ में लिया है कि अलंकार 'शोभा करनेवाले धर्म हैं, न कि शोभा बढ़ानेवाले'।

हिंदी में प्राय: अलंकारों का अर्थ 'शोभा बढ़ानेवाले' उपादान या अवयव के रूप में लिया गया है। शोभा बढ़ाने का तो अर्थ है कि कोई स्त्री यदि सुंदर है और वह शृंगार कर आभूषण पहन लेती है, तो आभूषण उसकी शोभा में वृद्धि कर देते हैं। अब प्रश्न यह उठता है कि क्या अलंकार असुंदर महिला के सौंदर्य में भी वृद्धि कर सकते हैं?

अलंकारवादी आचार्य जो 'अलंकार' को ही काव्य की आत्मा मानते थे, उनका कहना तो यही था कि 'अलंकार' असुंदर को भी सुंदर कर देते हैं, केवल सुंदरता बढ़ाने का काम नहीं करते। इसीलिए उन्होंने अलंकारों को 'अलं करोतीति अलंकार:' कहा था। अलंकारवादी आचार्यों के अनुसार, काव्य में 'अलंकार' का यही कार्य है, अत: 'काव्य में शोभा करनेवाले धर्म अलंकार हैं।' ये कविता में 'चमत्कार' पैदा कर देते हैं। 'चमत्कार' शब्द का अर्थ भी यहाँ समझ लेना उपयुक्त होगा। 'चमत्' शब्द का अर्थ है–'बिजली' और 'कार' के अर्थ से आप परिचित हो ही चुके हैं। गरजते काले बादलों के बीच 'बिजली' चमकती है और हमारा मन मोहित कर लेती है, उसी तरह काव्य में अलंकार भी बिजली जैसी चमक या प्रकाश-सौंदर्य पैदा कर हमारे मन को अपनी ओर खींच लेते हैं।

भाषा में दो ही तत्व प्रधान होते हैं–'अर्थ' एवं 'अभिव्यक्ति'। अभिव्यक्ति के स्तर पर शब्दों तथा शब्दों से बने पद और पदबंधों का महत्व होता है, तो 'अर्थ' भाषा की आंतरिक वस्तु है। अलंकारवादी आचार्यों ने जब 'अलंकारों' को काव्य की आत्मा घोषित किया, तो उन्होंने 'अलंकार' के क्षेत्र में एक-एक वर्ण से बने शब्दों के सौंदर्य से लेकर अर्थ से उत्पन्न होनेवाली समस्त सौंदर्य-छटाओं को सम्मिलित कर लिया और अलंकारों के **दो** भेद किए–

**1. शब्दालंकार** **2. अर्थालंकार**

यों तो दोनों वर्गों के अंतर्गत आनेवाले अलंकारों की संख्या सैकड़ों में है, लेकिन कक्षा X के पाठ्यक्रम में निम्नलिखित शब्दालंकारों एवं अर्थालंकारों को रखा गया है–

**1. शब्दालंकार–**
अनुप्रास अलंकार
यमक अलंकार

**2. अर्थालंकार–**
उपमा अलंकार, रूपक अलंकार
अतिशयोक्ति अलंकार, मानवीकरण अलंकार

• **सबसे पहले हम शब्दालंकारों की चर्चा करेंगे।**

## शब्दालंकार

काव्य में जहाँ शब्दों के विशिष्ट प्रयोग से चमत्कार उत्पन्न होता है, वहाँ 'शब्दालंकारों' की सत्ता होती है। शब्दालंकारों का अस्तित्व **शब्द-विशेष** के कारण होता है।

**उदाहरणस्वरूप–** यदि किसी **शब्द-विशेष** के स्थान पर कोई अन्य समानार्थी शब्द रख दिया जाए तो 'चमत्कार' समाप्त हो जाता है। उदाहरण के लिए, **वर को छोड़ और वर ले लो** पंक्ति में 'वर' शब्द के दो बार प्रयोग करने से चमत्कार उत्पन्न हुआ है। यहाँ पहले 'वर' शब्द का अर्थ है–'पति' तथा दूसरे 'वर' का अर्थ है–'वरदान'। इस पंक्ति का संबंध 'सावित्री' की कथा के उस प्रसंग से है, जहाँ यमराज सावित्री के पति सत्यवान के प्राण लेकर जा रहे हैं और वह अपने पति के प्राण लौटाने का अनुरोध कर रही है। यमराज कह रहे हैं कि वर (पति) को छोड़कर तुम कोई भी वर (वरदान) माँग लो। यहाँ यदि पहले 'वर' के स्थान पर समानार्थी शब्द 'पति' रख दिया जाए और कहा जाए 'पति को छोड़ और वर ले लो' तो कविता के जिस चमत्कार को कवि उत्पन्न करना चाहता है, समाप्त हो जाता है।

## शब्दालंकार के भेद

### 1. अनुप्रास अलंकार

अनुप्रास अलंकार के अंतर्गत आचार्यों ने शब्द की रचना करनेवाले 'वर्णों' के प्रयोग से उत्पन्न सौंदर्य या चमत्कार को लिया है।

**किसी कविता में जहाँ समान वर्णों की आवृत्ति से चमत्कार उत्पन्न होता है वहाँ 'अनुप्रास अलंकार' होता है।**

वर्णों की आवृत्ति शब्दों के आरंभिक वर्णों के रूप में, मध्य के वर्णों के रूप में या अंतिम वर्णों के रूप में अर्थात किसी भी रूप में हो सकती है। उदाहरण देखिए–

**शब्द के आरंभिक वर्णों में आवृत्ति**

- **मो**र **मु**कुट **म**कराकृत कुंडल, अरुन तिलक दिए भाल
  ('म' वर्ण की आवृत्ति)
- **क**ल **का**नन **कुं**डल मोर पखा, उर पै **ब**नमाल **बि**राजत है
  ('क' तथा 'ब' वर्ण की आवृत्ति)

- तरिन तनुजा तट तमाल तरुवर बहु छाए ('त' वर्ण की आवृत्ति)
- कालिंदी कूल कदंब की डारन ('क' वर्ण की आवृत्ति)
- रघुपति राघव राजा राम ('र' वर्ण की आवृत्ति)
- सुरभित सुंदर सुखद सुमन तुझ पर खिलते हैं ('स' वर्ण की आवृत्ति)
- सठ सुधरहिं सत संगति पाई ('स' वर्ण की आवृत्ति)
- मुदित महीपति मंदिर आए। सेवक सचिव सुमंत बुलाए। ('म' तथा 'स' वर्ण की आवृत्ति)
- प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माहीं ('म' वर्ण की आवृत्ति)

**शब्द के मध्य के वर्णों में आवृत्ति**

- छोरटी है गोरटी या चोरटी अहीर की ('र' वर्ण की आवृत्ति)

**शब्द के अंतिम वर्णों में आवृत्ति**

- छोर**टी** है, गोर**टी** या चोर**टी** अहीर की ('ट' वर्ण की आवृत्ति)
- कंकन, किंकिन, नूपुर धुनि, सुनि ('न' वर्ण की आवृत्ति)
- जाके सिर मोर मुकुट मेरो पति सोई ('र' वर्ण की आवृत्ति)
- मन-क्रम-वचन ध्यान जो लावैं ('न' वर्ण की आवृत्ति)
- संकट कटै मिटै सब पीरा ('ट' वर्ण तथा 'ऐ' वर्ण की आवृत्ति)
- सुख दुख अपने बंधुओं का आप अपना मान लो। ('ख' वर्ण की आवृत्ति)

**अन्य मिश्रित उदाहरण**

मिश्रित उदाहरणों में वर्णों की आवृत्ति आदि, मध्य और अंत कहीं भी हो सकती है; जैसे–

- चाहे जहाँ जाकर रहे जीवित न तू रह पाएगा
- जग में सचर-अचर जितने हैं, सारे कर्म निरत हैं
- रवि जग में शोभा सरसता सोम सुधा बरसाता
- जिस पर गिरकर उदर दरी से तुमने जन्म लिया है।
- समदरसी है नाम तुम्हारौ, सोई पार करौं
- जाकी कृपा पंगु गिर लंघै, अंधे कौ सब कछु दरसाई

## 2. यमक अलंकार

अनुप्रास अलंकार में जहाँ वर्णों का 'चमत्कार' प्रधान होता है, वहीं 'यमक' में शब्दों का।

**जहाँ एक शब्द की आवृत्ति एक से अधिक बार होती है और हर बार उसका अर्थ भिन्न होता है, वहाँ 'यमक अलंकार' होता है।**

आरंभ में '**वर** को छोड़ और **वर** ले लो' में 'वर' शब्द यमक अलंकार का ही उदाहरण है।

**अन्य उदाहरण–**

- बापू को कर नित दूर-दूर,
  हर **बरस, बरस** दिन आता है।

यहाँ प्रथम 'बरस' शब्द का अर्थ है–'वर्ष / साल' तथा दूसरे 'बरस' शब्द का अर्थ है 'मृत्यु' तथा 'बरस दिन' का अर्थ है–'मृत्यु दिवस', अतः यहाँ 'यमक अलंकार' है।

- माला फेरत जुग भया, गया न मन का फेर।
  कर का **मनका** डारि दे, मन का **मनका** फेर।।
  यहाँ 'कर का मनका ... मनका फेर' पंक्ति में **मनका** शब्द दो बार आया है। पहले 'मनका' का अर्थ है–'माला का दाना', दूसरे 'मनका' का अर्थ है–'हृदय का' अर्थात पूरी पंक्ति में कवि कह रहा है कि 'कर का मनका' (हाथ की माला) को फेंक दे तथा 'मन का मनका' (मन की/हृदय की माला) का जाप कर। अतः यह 'यमक अलंकार' का उदाहरण है।
- **कनक कनक** ते सौगुनी मादकता अधिकाय।
  या खाए बौरात है, वा पाए बौराय।।
  यहाँ 'कनक' शब्द की आवृत्ति दो बार हुई है। पहले 'कनक' का अर्थ है–'धतूरा' तथा दूसरे का अर्थ है–'सोना'। पंक्ति का अर्थ है कि पहले 'कनक' (धतूरा) की तुलना में दूसरे 'कनक' (सोना) में सौगुनी मादकता है क्योंकि पहले अर्थात धतूरे को तो व्यक्ति खाकर पागल होता है, पर सोने अर्थात धन-संपत्ति को तो पाकर ही पागल हो जाता है।
- जे 'तीन **बेर** खाती थीं ते तीन **बेर** खाती हैं'
  यहाँ पहले 'बेर' का अर्थ 'बेर' (फल) है और दूसरे 'बेर' का अर्थ 'बार' है। पंक्ति का अर्थ है कि वह केवल 'तीन बेर फल (विशेष) तीन बार खाती हैं।'
- 'काली **घटा** का घमंड **घटा** नभतारक मंडल वृंद खिले'
  यहाँ 'घटा' शब्द पर यमक अलंकार है। पहली 'घटा' शब्द का अर्थ है– 'काले बादलों की घटा' तथा दूसरी घटा का अर्थ है– 'कम हुआ'। पंक्ति का अर्थ है कि जब आकाश में 'तारा-मंडल' उदित हुआ, तो 'काली घटा' का घमंड घट गया।
- 'तू मोहन के **उरबसी**, ह्वे **उरबसी** समान।'
  पहले 'उरबसी' शब्द का अर्थ है–'उर/हृदय में बसी हुई' तथा दूसरे 'उरबसी' का अर्थ है– 'उर्वशी' (देव सुंदरी)। पंक्ति का अर्थ है कि तू कृष्ण के मन में 'उर्वशी' के समान बसी हुई है।

## अर्थालंकार

**'अर्थालंकार'** अर्थ द्वारा उत्पन्न सौंदर्य पर कार्य करते हैं। अर्थालंकारों को समझने के लिए कुछ आधारभूत बातों को समझ लेना चाहिए।

## अर्थालंकार से संबंधित आधारभूत बातें–

1. काव्य में कवि किसी व्यक्ति या वस्तु का वर्णन करता है और उसकी समानता किसी बाहरी व्यक्ति या वस्तु से दिखाता है। कवि जिस व्यक्ति/वस्तु का वर्णन करता है, वह कवि के लिए **प्रस्तुत** होता है और जिस बाहरी व्यक्ति या वस्तु से उसकी समानता दिखाई जाती है, उसे **अप्रस्तुत** कहते हैं।
2. इस तरह समस्त काव्य 'प्रस्तुत' तथा 'अप्रस्तुत' के बीच ही चलता है। कभी कवि प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत की तुलना करता है, कभी प्रस्तुत तथा अप्रस्तुत की समानता बताता है, कभी प्रस्तुत पर अप्रस्तुत का आरोप करता है, तो कभी प्रस्तुत में अप्रस्तुत की संभावना व्यक्त करता है।
3. इन्हीं सब प्रक्रियाओं के कारण विभिन्न प्रकार के अर्थालंकार सामने आते हैं।
4. अलंकार शास्त्र में 'प्रस्तुत' को **उपमेय** तथा अप्रस्तुत को **उपमान** भी कहा गया है।

## अर्थालंकार के भेद

### 1. उपमा अलंकार

**जब दो व्यक्तियों या वस्तुओं में समान गुण/धर्मों के कारण समानता बताई जाती है, वहाँ 'उपमा अलंकार' होता है।**

जैसे– 'सीता की आँखें मृग के समान चंचल हैं।'

इस पंक्ति में सीता की आँखों की चंचलता मृग के समान बताई गई है। अत: यहाँ सीता की आँखें 'प्रस्तुत' होंगी और मृग 'अप्रस्तुत'।

- दो वस्तुओं के बीच जब समानता बताई जाती है तब चार वस्तुएँ हमारे समक्ष आती हैं–
  - (क) **प्रस्तुत या उपमेय–** जिस व्यक्ति या वस्तु की समानता बताई जाती है, वह प्रस्तुत या उपमेय होता है।
    उपर्युक्त पंक्ति में उपमेय हैं– सीता की आँखें।
  - (ख) **अप्रस्तुत या उपमान–** जिस वस्तु से समानता बताई जा रही हो, वह वस्तु 'उपमान' कहलाती है। उपर्युक्त पंक्ति में उपमान है–'मृग'।
  - (ग) **साधारण धर्म–** वह समान गुण या धर्म, जिसके आधार पर समानता बताई गई हो। उपर्युक्त पंक्ति में साधारण धर्म है–'चंचल'।
  - (घ) **वाचक शब्द–** अर्थात समानता को बतानेवाला शब्द। उपर्युक्त पंक्ति में 'के समान' वाचक शब्द है।

- ये चारों 'उपमा अलंकार' के अंग कहलाते हैं।
- जिस उपमा अलंकार में उपर्युक्त चारों अंग पाए जाते हैं, उसे **पूर्णोपमा अलंकार** कहते हैं तथा जिस उपमा अलंकार में किसी एक अंग का भी लोप होता है, उसे **लुप्तोपमा अलंकार** कहते हैं।

**दोनों के उदाहरण देखिए–**

**पूर्णोपमा**

- 'पीपर पात सरिस मन डोला'
  - (*i*) उपमेय (प्रस्तुत) = मन
  - (*ii*) उपमान (अप्रस्तुत) = पीपर पात
  - (*iii*) साधारण धर्म = डोलना
  - (*iv*) वाचक शब्द = सरिस (के समान)
- 'यह देखिए, अरविंद-से शिशुवृंद कैसे सो रहे'
  - (*i*) उपमेय (प्रस्तुत) = शिशुवृंद
  - (*ii*) उपमान (अप्रस्तुत) = अरविंद
  - (*iii*) साधारण धर्म = कैसे सो रहे
  - (*iv*) वाचक शब्द = से
- 'हरिपद कोमल कमल-से'
  - (*i*) उपमेय (प्रस्तुत) = हरिपद
  - (*ii*) उपमान (अप्रस्तुत) = कमल
  - (*iii*) साधारण धर्म = कोमल
  - (*iv*) वाचक शब्द = से

**लुप्तोपमा**

- 'मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला'
  - (*i*) उपमेय (प्रस्तुत) = टीला
  - (*ii*) उपमान (अप्रस्तुत) = मखमल के झूल पड़े हाथी
  - (*iii*) साधारण धर्म = लुप्त
  - (*iv*) वाचक शब्द = सा
- 'वह नवनलिनी-से नयनवाला कहाँ है'
  - (*i*) उपमेय (प्रस्तुत) = नयनवाला
  - (*ii*) उपमान (अप्रस्तुत) = नवनलिनी
  - (*iii*) साधारण धर्म = लुप्त
  - (*iv*) वाचक शब्द = से

**अन्य उदाहरण–**

- हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी (बच्ची की तुलना फूल से)
- उषा सुनहले तीर बरसाती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई (उषा की तुलना तीर बरसाती जयलक्ष्मी से)
- नीलगगन सदृश शांत था सो रहा (सोते हुए व्यक्ति की तुलना शांत नीलगगन से)
- कबिरा माया मोहिनी जैसे मीठी खाँड़ (मोहिनी माया की तुलना मीठी खाँड़ से)
- उधर गरजतीं सिंधु लहरियाँ, कुटिल काल के ज्वालों-सी,
  चली आ रहीं फेन उगलती फन फैलाए व्यालों-सी।
  (सिंधु की लहरों की तुलना फन फैलाकर आनेवाली सर्पिणियों से)
- निकल रही थी मर्म वेदना करुणा विकल कहानी-सी (मर्म वेदना की तुलना करुणा विकल कहानी के साथ।)
- उषा ज्योत्स्ना-सा यौवन स्मित (यौवन स्मित की तुलना उषा ज्योत्स्ना के साथ।)
- गंगा तेरा नीर अमृत सम उत्तम है (गंगा के जल की तुलना अमृत के साथ)
- तब तो बहता समय शिला-सा बन जाएगा। (समय की तुलना शिला के साथ)
- फैली खेतों में दूर तलक
  मखमल-सी कोमल हरियाली (हरियाली की तुलना मखमल के साथ)
- लिपटीं जिसमें रवि की किरणें।
  चाँदी की-सी उजली जाली। (हरियाली में लिपटीं रवि की किरणों की तुलना चाँदी की जाली के साथ)
- मखमली पेटियों-सी लटकी,
  छीमियाँ, छिपाए बीज लड़ी। (बीजों की लड़ियों को छिपाए छीमियों की तुलना मखमली पेटियों के साथ)
- मरकत डिब्बे-सा खुला ग्राम (ग्राम की तुलना मरकत के डिब्बे के साथ)
- सुंदर गेहूँ की बालों पर, मोती के दानों-से हिमकण (हिमकणों की तुलना मोती के दानों के साथ)

## 2. रूपक अलंकार

'रूपक अलंकार' वहाँ होता है, जहाँ 'प्रस्तुत' और 'अप्रस्तुत' में बहुत अधिक समानता होने के कारण दोनों को एक समझ लिया जाता है या 'उपमेय' पर 'उपमान' का आरोप किया जाता है।

जैसे– 'कमल-नयन' का अर्थ है–'कमल रूपी नेत्र।'

'उपमा' तथा 'रूपक' दोनों में यही अंतर है कि 'उपमा' में जहाँ उपमेय तथा उपमान में समानता दिखाई जाती है, वहीं 'रूपक' में उपमेय पर उपमान का आरोपण किया जाता है।

**अन्य उदाहरण–**

- **चरण-कमल** बंदौ हरिराई (कमल रूपी चरण : उपमेय = चरण, उपमान = कमल)
- **विष-बाण** बूँद से छूटेंगे (विष रूपी बाण : उपमेय = बाण, उपमान = विष)
- **शशि-मुख** पर घूँघट डाले
  अंचल में दीप छिपाए (शशि रूपी मुख : उपमेय = मुख, उपमान = शशि)
- **अंबर-पनघट** में डुबो रही
  **तारा-घट उषा-नागरी** (पनघट रूपी अंबर : उपमेय =पनघट,
  उपमान = अंबर)
  **अर्थ–** अंबर रूपी पनघट में उषा रूपी नागरी (स्त्री) तारा रूपी घट (घड़े) को डुबो रही है (रात्रि समाप्त होने तथा सुबह होने का सुंदर चित्रण है।)
  **तारा-घट :** उपमेय = घट, उपमान = तारा
  **उषा-नागरी :** उपमेय = नागरी, उपमान = उषा
- **अभिमन्यु-धन** के निधन में कारण हुआ जो मूल है
  (अभिमन्यु रूपी धन)
- सतत ज्वलित **दुख-दावानल** में, जग के दारुन रन में
  (दुख रूपी दावानल)
- ओ चिंता की पहली रेखा, अरी **विश्व-वन की व्याली**
  (विश्व रूपी वन की सर्पिणी)
- आए **महंत-वसंत** (महंत रूपी वसंत)
- मैया मैं तो **चंद्र-खिलौना** लैहों (चंद्रमा रूपी खिलौना)
- पायो जी मैंने **राम-रतन धन** पायो (राम-रतन रूपी धन)

- उदित **उदयगिरि-मंच** पर, रघुवर **बाल-पतंग।**

  (उदयगिरी रूपी मंच, बाल-सूर्य रूपी रघुवर)

  विकसे **संत-सरोज** सब, हरषे **लोचन-भृंग।।**

  (सरोज रूपी सब संत, भृंग (भँवरे) रूपी लोचन)
- वन-शारदी **चंद्रिका-चादर** ओढ़े (चंद्रिका रूपी चादर)
- वाडव ज्वाला-सी सोती थी,
  इस **प्रणय-सिंधु** के तल में। (प्रणय रूपी सिंधु)
- हरी-भरी सी दौड़-धूप औ **जल-माया** की चल रेखा

  (जल रूपी माया)
- **माया-दीपक नर-पतंग** भ्रमि-भ्रमि इवै पड़ंत (माया रूपी दीपक तथा नर रूपी पतगें)
- वे शत्रु सत्वर **शोक-सागर-मग्न** दिखेंगे सभी (शोक रूपी सागर में मग्न)
- क्या उनका **उपकार-भार** तुम पर लवलेश नहीं है (उपकार रूपी भार)

## 3. अतिशयोक्ति अलंकार

'अतिशयोक्ति' शब्द दो शब्दों से मिलकर बना है– 'अतिशय' तथा 'उक्ति' अर्थात ऐसी उक्ति जो अतिशयता के साथ कही गई हो या बढ़ा-चढ़ाकर कही गई हो। **इस तरह कविता में जब 'प्रस्तुत' या 'उपमेय' का वर्णन बहुत बढ़ा-चढ़ाकर अतिशयपूर्ण ढंग से किया जाता है, तब वहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' होता है।**

**निम्नलिखित उदाहरण देखिए–**

हनुमान की पूँछ में, लगन न पाई आग।
लंका सगरी जल गई, गए निसाचर भाग।।

**अर्थात–** हनुमान की पूँछ में अभी आग लग भी न पाई थी कि (उससे पहले ही) सारी लंका जल गई और सारे निशाचर भाग गए। यहाँ प्रसंग का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है, अत: 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

**अन्य उदाहरण–**

- वह शर इधर गांडीव गुण से भिन्न जैसे ही हुआ।
  धड़ से जयद्रथ का इधर, सिर छिन्न वैसे ही हुआ।।

**अर्थात–** अर्जुन के गांडीव से तीर निकलकर जैसे ही अलग हुआ, वैसे ही जयद्रथ का सिर धड़ से कटकर अलग हो गया। यहाँ भी प्रस्तुत प्रसंग का वर्णन बढ़ा-चढ़ाकर किया गया है, अतः 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

- देख लो साकेत नगरी है यही।
  स्वर्ग से मिलने गगन में जा रही।
  यहाँ 'साकेत' नगरी का वर्णन है, जिसके गगनचुंबी भवन इस प्रकार के हैं, जिन्हें देखकर लगता है मानो सारी नगरी आकाश से मिलने जा रही हो। यहाँ साकेत नगरी का अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन किया गया है। अतः 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार।
  राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।
  **अर्थात–** जब तक राणा ने सोचा कि अपार नदी को घोड़ा कैसे पार करेगा, उससे पहले ही चेतक (राणा का घोड़ा) नदी के उस पार था। सोचने से पहले ही चेतक ने नदी पार की, यह अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है। अतः इसमें 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- 'मुख बाल रवि सम लाल होकर, ज्वाल-सा बोधित हुआ।'
  उपमेय = मुख, उपमान = बाल रवि
  मुख का बाल रवि के समान लाल ज्वाला जैसा लगना अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है। अतः यह 'अतिशयोक्ति अलंकार' का उदाहरण है।
- देखि सुदामा की दीन दशा, करुणा करके करुणानिधि रोए।
  पानी परात को हाथ छुओ नहिं, नैनन के जल सों पग धोए।।
  **अर्थात–** सुदामा की दीन दशा देखकर श्री कृष्ण करुणापूर्वक रो पड़े। सुदामा के पैरों को धोने के लिए परात में जो पानी मँगाया था, उसको तो छुआ ही नहीं, अपने आँसुओं के जल से ही सुदामा के पग (पैर) धो दिए।
  सुदामा के पैरों को धोने का वर्णन अतिशयोक्तिपूर्ण है। अतः यहाँ 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- 'प्राण छूटै प्रथमै रिपु के रघुनायक सायक छूट न पाए'
  **अर्थात–** राम के बाण छूट भी नहीं पाते थे, उससे पहले ही रिपु (शत्रु) के प्राण छूट जाते थे। यह संभव नहीं हो सकता। अतः अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन होने के कारण 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।
- शर खींच उसने तूण से कब किधर संधाना उन्हें।
  बस बिद्ध होकर ही विपक्षी वृंद ने जाना उन्हें।।

**अर्थात–** उसने कब तूण से तीर निकालकर संधान किया, इस बात को विपक्षी दल ने तभी जाना, जब शत्रु घायल होकर गिर पड़ा। यहाँ अतिशयोक्तिपूर्ण वर्णन है। अत: 'अतिशयोक्ति अलंकार' है।

**अब कुछ अन्य उदाहरण देखिए–**

- पीय गमन की बात सुनि सूखे तिन के अंग।
- अनियारे दीरघ दृगनु, किती न तरुनि समान।
  वह चितवन औरे कछु, जिहिं बस होत सुजान।।
- बाँधा था विधु को किसने इन काली जंजीरों से।
  मणि वाले फणियों का मुख, क्यों भरा हुआ हीरों से।।

## 4. मानवीकरण अलंकार

'मानवीकरण' शब्द का अर्थ है–'किसी को मानव बना देना।' वस्तुत: काव्य में कवि जब प्रकृति का वर्णन करता है, तो प्रकृति को इस रूप में चित्रित करता है, जैसे वह कोई 'मानव' या 'मानवी' हो। ऐसे स्थलों पर 'मानवीकरण अलंकार' होता है।

हिंदी साहित्य के 'छायावादी' युग के कवियों ने अपनी कविता में प्रकृति को 'नारी', 'शक्ति' आदि के रूप में चित्रित किया है। प्रकृति उनकी कविता में मानवी के रूप में आती है और वहीं से हिंदी में 'मानवीकरण अलंकार' के दर्शन होते हैं।

उदाहरण के लिए, जयशंकर प्रसाद द्वारा रचित महाकाव्य 'कामायनी' की निम्नलिखित पंक्तियाँ देखिए, जिसमें 'उषा' को जयलक्ष्मी के रूप में चित्रित कर मानवीकरण अलंकार का सुंदर उदाहरण प्रस्तुत किया गया है।

उषा सुनहले तीर बरसाती जयलक्ष्मी-सी उदित हुई,
उधर पराजित काल रात्रि भी जल में अंतर्निहित हुई।।

**अर्थात–** 'उषा' का आगमन ऐसा लग रहा है, जैसे सुनहले तीरों की वर्षा करती हुई विजयलक्ष्मी प्रकट हो रही हो तथा दूसरी ओर 'रात्रि' जो पराजित हो गई है, वह मानो उषा के डर से जल-समाधि लेने जा रही है।

'उषा' तथा 'रात्रि' को कवि ने 'मानवी' के रूप में चित्रित कर मानवीकरण अलंकार का सुंदर चित्र प्रस्तुत किया है।

**अन्य उदाहरण–**

- दिवसावसान का समय
  मेघमय आसमान से उतर रही

वह संध्या-सुंदरी परी-सी
धीरे-धीरे-धीरे।

यहाँ संध्या' को एक सुंदर परी के रूप में आसमान से धीरे-धीरे उतरते हुए चित्रित करना मानवीकरण अलंकार का सुंदर उदाहरण है।

- ओ चिंता की पहली रेखा
अरी विश्व-वन की व्याली
ज्वालामुखी-स्फोट की भीषण
प्रथम कंप-सी मतवाली।

'चिंता' की रेखाएँ मनुष्य के मस्तक पर दिखाई देती हैं, जो मनुष्य को धीरे-धीरे खा जाती हैं। चिंता की पहली रेखा को कवि मानवीकरण के द्वारा विश्व-रूपी सर्पिणी के रूप में चित्रित कर रहा है। अतः यहाँ 'मानवीकरण अलंकार' है।

- बीती विभावरी जाग री
अंबर पनघट में डुबो रही
तारा-घट उषा-नागरी

यहाँ भी कवि ने उषा को उस नायिका के रूप में चित्रित किया है, जो तारा रूपी घटों को अंबर-रूपी पनघट में डुबो रही है। अतः मानवीकरण अलंकार है।

- 'लज्जा' के भाव का चित्रण कवि प्रसाद ने इस रूप में किया है, जैसे वह कोई नवयौवना हो।
वैसी ही माया में लिपटी, अधरों पर उँगली धरे हुए,
माधव के सरस कुतूहल का, आँखों में पानी भरे हुए,
नीरव-निशीथ में लतिका-सी, तुम कौन आ रही हो बढ़ती,
कोमल बाँहें, फैलाती-सी, आलिंगन का जादू करती।
इतना ही नहीं 'लज्जा' भी एक मानवी के रूप में उत्तर देती है–
'मैं रति की प्रतिकृति लज्जा हूँ, शालीनता सिखाती हूँ'। लज्जा 'रति' की प्रतिकृति/प्रतिबिंब है जो युवतियों को शालीनता की शिक्षा देती है। उपर्युक्त दोनों उदाहरण 'मानवीकरण' के सुंदर उदाहरण हैं।

- सिंधु-सेज पर धरा-वधू अब
तनिक संकुचित बैठी-सी।
प्रलय निशा की हलचल स्मृति में
मान किए-सी ऐंठी-सी।

यहाँ पृथ्वी के मानवीकरण का एक सुंदर चित्र प्रस्तुत किया गया है। इसमें पृथ्वी को वधू के रूप में चित्रित किया गया है जो कि संकोच में रूठी हुई-सी बैठी है। अतः यहाँ 'मानवीकरण अलंकार' है।

उपर्युक्त पंक्तियों में पृथ्वी को संकोच में रूठी हुई-सी बैठी हुई वधू के रूप में चित्रित किया गया है।

- सुमित्रानंदन पंत की निम्नलिखित पंक्तियों में 'गंगा' नदी का मानवीकरण किया गया है–

सैकत-शय्या पर दुग्ध-धवल,
तन्वंगी गंगा ग्रीष्म विरल,
लेटी है शांत, क्लांत, निश्चल।

## अभ्यास-कार्य

**1. प्रत्येक अलंकार का एक-एक उदाहरण दीजिए।**

1. अनुप्रास : .....
2. यमक : .....
3. उपमा : .....
4. रूपक : .....
5. अतिशयोक्ति : .....
6. मानवीकरण : .....

**2. प्रस्तुत पंक्तियों में कौन-सा अलंकार है?**

1. आए महंत बसंत .....
2. मखमल के झूल पड़े हाथी-सा टीला .....
3. काली घटा का घमंड घटा, नभमंडल तारकवृंद खिले .....
4. सुरभित सुंदर सुमन तुम पर खिलते हैं .....
5. बीती विभावरी जाग री
   अंबर पनघट में डुबो रही
   तारा-घट उषा-नागरी .....
6. भूप सहस दस एकहिं बारा। लगे उठावन टरइ न टारा। .....
7. शशि-मुख पर घूँघट डाले। .....
8. मुदित महीपति मंदिर आए। .....
9. यह देखिए, अरविंद से शिशुवृंद कैसे सो रहे। .....
10. रति-रति शोभा सब रति के शरीर की। .....

11. हरषाया ताल लाया पानी परात भरके। .....
12. कहे कवि बेनी, बेनी व्याल की चुराई लीन्हीं। .....
13. बरसत बारिद बूँद गहि, चाहत चढ़न अकाश। .....
14. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची हुई राख की थी ढेरी। .....
15. पीपर पात सरिस मन डोला। .....
16. आरसी से अंबर में आभा-सी उजारी लगै। .....
17. कंकन किंकिन नूपुर धुनि सुनि। .....
18. मुख बाल रवि-सम लाल होकर ज्वाल-सा बोधित हुआ। .....
19. मैया मैं तो चंद्र-खिलौना लैहों। .....
20. मेघ आए बन-ठन के, सँवर के। .....
21. है बसुंधरा बिखरा देती, मोती सबके सोने पर। .....
22. चरण-कमल बंदौ हरिराई। .....
23. जा तन की झाँई परे श्याम हरित दुति होय। .....
24. तीन बेर खाती थीं वे तीन बेर खाती हैं। .....
25. सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा। .....
26. कर का मनका डारि दे मन का मनका फेर। .....
27. आगे-आगे नाचती गाती बयार चली। .....
28. अपरस रहत सनेह तगा तैं, नाहिन मन अनुरागी .....
29. पुरइनि पात रहत जल भीतर .....
30. प्रीति-नदी में पाऊँ न बोर्‌यौ .....
31. अवधि अधार आस आवन की .....
32. हमारैं हरि हारिल की लकड़ी। .....
33. सुनहु राम जेहि सिवधनु तोरा। सहस्रबाहु सम सो रिपु मोरा। .....
34. छुअत टूट रघुपतिहु न दोसू। मुनि बिनु काज करिअ कत रोसू। .....
35. मधुर-मधुर मुसकान मनोहर, मनहुँ देश का उजियाला .....
36. जेते तुम तारे तेते नभ में न तारे हैं .....
37. वह दीपशिखा-सी शांत भाव में लीन .....
38. असंख्य कीर्ति रश्मियाँ विकीर्ण दिव्य दाह-सी। .....
39. लो यह लतिका भी भर लाई, मधु मुकुल नवल रस गगरी। .....
40. आगे नदिया पड़ी अपार, घोड़ा कैसे उतरे पार। .....
    राणा ने सोचा इस पार, तब तक चेतक था उस पार।।

**3. निम्नलिखित पंक्तियों में से उपमेय छाँटिए।**

1. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसा .....
2. हरिपद कोमल कमल-से .....
3. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी .....
4. पीपर-पात सरिस मन डोला .....
5. उदित उदय-गिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग .....
6. शशि-मुख पर घूँघट डाले .....
7. नभ-मंडल छाया मरुस्थल-सा .....
8. कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा .....
9. काम-सा रूप .....
10. सोम-सा शील है राम महीप का .....

**4. निम्नलिखित पंक्तियों में उपमान छाँटिए।**

1. सोम-सा शील है राम महीप का .....
2. प्रात नभ था बहुत नीला शंख जैसा .....
3. काम-सा रूप .....
4. हरिपद कोमल कमल से .....
5. कोटि कुलिस सम वचन तुम्हारा .....
6. हाय! फूल-सी कोमल बच्ची, हुई राख की थी ढेरी .....
7. नभ-मंडल छाया मरुस्थल-सा .....
8. पीपर पात सरिस मन डोला .....
9. उदित उदय-गिरि मंच पर, रघुवर बाल-पतंग .....
10. शशि-मुख पर घूँघट डाले .....

❑❑❑

# 3 लघु कथा-लेखन (Short Story-Writing)

साहित्य की सभी विधाओं में 'कहानी' का विशेष स्थान है। कहानी सुनना-सुनाना सभी को अच्छा लगता है। बच्चों को तो कहानियाँ बहुत प्रिय होती हैं।

साहित्य की सभी विधाओं में कहानी, सबसे पुरानी विधा है और जनजीवन में सबसे अधिक लोकप्रिय है। कहानी में किसी सत्य अथवा काल्पनिक घटना का इस प्रकार कथन किया जाता है, जिसे श्रोता रुचिपूर्वक सुनता है। इसीलिए कहानी में एक कहानी कहने वाला और एक कहानी सुनने वाला अवश्य होता है।

पहले कहानी का उद्देश्य उपदेश देना और मनोरंजन करना माना जाता था, लेकिन आज इसका लक्ष्य मानव-जीवन की विभिन्न समस्याओं और संवेदनाओं को व्यक्त करना है। यही कारण है कि प्राचीन कथा से आधुनिक हिंदी कहानी बिलकुल भिन्न हो गई है।

जहाँ तक 'लघु-कथा' का प्रश्न है तो यह भी कथात्मक विधा है, पर कहानी से भिन्न है। क्योंकि दोनों के कलेवर में अंतर होता है इसलिए दोनों को एक मानकर नहीं चलना चाहिए। किसी भी कहानी को संक्षिप्त कर देने से लघु-कथा नहीं बन जाती। हाँ, यह सत्य है कि लघु कथा कहानी से सबसे अधिक निकट होती है। इसीलिए अंग्रेज़ी में 'कहानी' को 'story' कहते हैं तो 'लघु कथा' को 'Short Story'।

'लघु कथा' दिखने में छोटी अवश्य होती है, पर पाठक के मन पर इसका प्रभाव बहुत गहरा पड़ता है। कहानी की तुलना में लघु कथा लिखना अधिक श्रमसाध्य है। लघु कथा के प्रमुख गुण हैं– संक्षिप्तता, सूक्ष्मता और सांकेतिकता। कहानी की तरह लघु कथा में वर्णन और विवरण का अवकाश नहीं होता बल्कि संकेत और व्यंजना से काम चलाया जाता है।

ध्यान रखिए, 'लघु कथा' का महत्व उसकी लघुता में है जो वह कथा को प्रदान करती है। छोटी-छोटी बातों में बड़े अर्थ निकालना उसकी एक ख़ासियत है और अपनी बात संदेश रूप में कम-से-कम शब्दों में पाठक तक पहुँचाना, इसी में उसकी सफलता छुपी होती है। लघु कथा का सौंदर्य उसकी अपनी शैली, बनावट, कसावट, कथ्य और शिल्प में निहित होता है।

## लघु कथा की प्रमुख विशेषताएँ

**कथानक**–जहाँ कहानी के कथानक में घटनाओं का विस्तार होता है वहीं लघु कथा के कथानक में घटनाओं के विस्तार का अभाव होता है। कहानी में जहाँ संघर्ष की तीव्रता होती है वहीं लघु कथा में संघर्ष की तीव्रता नहीं होती है।

**पात्र-योजना–** कहानी की तुलना में लघु कथा में पात्रों की संख्या एक-दो तक ही सीमित होती है। लघु कथा में मानव के अलावा पशु-पक्षी भी हो सकते हैं।

**कल्पना की उड़ान–** लघु कथा में यथार्थ के साथ-साथ काल्पनिक अभिव्यक्ति भी हो सकती है। अर्थात लघु कथा में राजा, रानी, पशु-पक्षी आदि काल्पनिक पात्र भी हो सकते हैं और काल्पनिक घटनाएँ भी।

**शैली–** लघु कथा में लेखक अपनी बात संकेतों के माध्यम से व्यक्त करता है। अत: 'संकेतात्मकता' लघु कथा की शैली का विशिष्ट गुण है। लघु कथा लेखक में किसी बात को संक्षेप रूप में कहने की योग्यता होनी चाहिए। शैली की दृष्टि से लघु कथा किसी गद्य-गीत जैसी सुगठित होती है।

**उपदेशात्मकता–** लघु कथा में कोई-न-कोई उपेदश अवश्य होता है। अत: उपदेशात्मकता भी उसका प्रमुख गुण है।

**संक्षिप्तता–** लघु कथा का सारा कलेवर उसकी लघुता में निहित होता है। अत: कहानी की तरह उसमें विस्तार की गुंजाइश नहीं होती।

**उद्देश्य–** लघु कथा में उसका कोई-न-कोई उद्देश्य अवश्य निहित रहता है। 'लघु कथा' को पढ़ने के बाद यह उद्देश्य पाठक के समक्ष बिजली की कौंध की तरह अभिव्यक्त हो जाता है। इसमें जो उपदेश दिया जाता है वह भी एक तरह का उद्देश्य हो सकता है।

**विद्यार्थियों को लघु कथा-लेखन में दक्ष बनाने के लिए अध्यापकों द्वारा निम्नलिखित विधियाँ अपनाई जा सकती हैं–**

**1. संकेत-बिंदुओं के आधार पर लघु कथा-लेखन विधि**

**(क) संकेत-बिंदु–**

• एक गाँव में एक गरीब लकड़हारा का रहना • जंगल से लकड़ियाँ काटना और उन्हें बेचकर गुजारा करना • एक दिन नदी के किनारे के पेड़ से लकड़ियाँ काटते हुए कुल्हाड़ी छूटकर नदी में गिरना • जीवन-निर्वाह की चिंता होना • दुखी होकर रोना • तभी नदी में से जल-देवता का प्रकट होना • रोने का कारण पूछना • लकड़हारे द्वारा सारी बात बताना • जल-देवता द्वारा पहले सोने की कुल्हाड़ी लाना • लकड़हारे द्वारा अस्वीकार किया जाना • फिर चाँदी की कुल्हाड़ी लाना • इसे भी अस्वीकार करना • अंत में लोहे की कुल्हाड़ी लाना और लकड़हारे की स्वीकृति • देवता का उसकी ईमानदारी पर खुश होना और तीनों कुल्हाड़ी देना।

**लघु कथा–**

एक गाँव में एक गरीब लकड़हारा रहता था। वह जंगल से लकड़ियाँ काटकर लाता और उन्हें बेचकर गुजारा करता था। एक दिन वह नदी के किनारे के पेड़ पर चढ़कर लकड़ियाँ काट रहा था। अचानक उसके हाथ से कुल्हाड़ी छूटकर

नदी में गिर पड़ी, लकड़हारा सोचने लगा कि अब मैं अपना जीवन-निर्वाह कैसे करूँगा? सोचते-सोचते उसकी आँखों में आँसू आ गए, वह कुछ देर तक रोता रहा। इतने में नदी से जल-देवता प्रकट हुए। उन्होंने लकड़हारे से पूछा–"तुम रो क्यों रहे हो?" लकड़हारे ने देवता को सारी बात बताई।

जल-देवता ने कहा, "तुम रोओ मत। मैं अभी जाकर तुम्हारी कुल्हाड़ी लेकर आता हूँ।" जल-देवता नदी के अंदर गए और सोने की एक कुल्हाड़ी लेकर बाहर आए। उन्होंने इसे लकड़हारे को देते हुए कहा, "यह लो, तुम्हारी कुल्हाड़ी।" लकड़हारा एक ईमानदार व्यक्ति था। उसने कहा कि यह उसकी कुल्हाड़ी नहीं है। तब जल-देवता फिर नदी में गए और एक चाँदी की कुल्हाड़ी लेकर आए। लकड़हारे ने इस कुल्हाड़ी को भी लेने से मना कर दिया। तीसरी बार जल-देवता लोहे की कुल्हाड़ी लेकर आए। कुल्हाड़ी को देखते ही लकड़हारा खुश हो गया। उसने कहा, "यही मेरी कुल्हाड़ी है।" लकड़हारे की ईमानदारी देखकर जल-देवता बहुत प्रसन्न हुए और उन्होंने उसे तीनों कुल्हाड़ियाँ दे दीं। (पंचतंत्र से)

**शीर्षक–** ईमानदार लकड़हारा

**शिक्षा–** पंचतंत्र की यह प्रेरक लघु कथा हमें शिक्षा देती है कि मनुष्य को कभी भी ईमानदारी का रास्ता नहीं छोड़ना चाहिए, ईमानदारी का फल सदा मीठा होता है।

**(ख ) संकेत-बिंदु–**

• एक बार दो मित्रों का व्यापार करने के लिए जाना • मुसीबत के समय एक-दूसरे का साथ निभाने का वचन देना • चलते-चलते एक घने, विशाल और भयंकर जंगल में पहुँचना • एकाएक सामने से एक भालू आता हुआ दिखाई देना • दोनों का भयभीत होना • डरकर एक मित्र का पेड़ पर चढ़ जाना • दूसरे को वृक्ष पर चढ़ने न आना • घबरा जाना • झट से साँस रोककर ज़मीन पर लेट जाना • भालू का पास आकर उसे सूँघना • मरा हुआ समझकर चले जाना • कुछ देर बाद पहले दोस्त का पेड़ से नीचे उतरकर पूछना कि रीछ ने कान में क्या कहा • भूमि पर लेटने वाले मित्र का उत्तर – 'स्वार्थी मित्र पर विश्वास मत करो',

**लघु कथा–**

एक बार दो मित्र व्यापार करने के लिए घर से चले। दोनों ने एक-दूसरे को वचन दिया कि किसी भी मुसीबत के समय वे एक-दूसरे की सहायता करेंगे। चलते-चलते वे दोनों एक भयंकर जंगल में जा पहुँचे।

जंगल बहुत विशाल तथा घना था। दोनों मित्र सावधानी से जंगल में से गुजर रहे थे। एकाएक उन्हें सामने से एक भालू आता हुआ दिखाई दिया। भालू को देखकर दोनों मित्र बहुत भयभीत हो गए। भालू को पास आता देखकर एक मित्र तो जल्दी से पेड़ पर चढ़कर पत्तों में छिपकर बैठ गया, दूसरे मित्र को वृक्ष पर चढ़ना नहीं आता था। वह घबरा गया, लेकिन उसने हिम्मत नहीं हारी। उसने कहीं सुना था कि भालू मरे हुए आदमी को नहीं खाता, वह झट से अपनी साँस रोककर

ज़मीन पर लेट गया। भालू ने पास आकर उसे सूँघा और मरा हुआ समझकर वहाँ से चला गया। कुछ देर बाद पहला दोस्त पेड़ से नीचे उतरा, उसने दूसरे मित्र से कहा–"उठो दोस्त, भालू चला गया, यह तो बताओ कि उसने तुम्हारे कान में क्या कहा था?" भूमि पर लेटने वाले मित्र ने कहा कि भालू केवल यही कह रहा था कि स्वार्थी मित्र पर विश्वास नहीं करना चाहिए।

**शीर्षक–** दोस्त की पहचान

**शिक्षा–** असली दोस्त की पहचान मुसीबत के समय ही होती है। मित्र वही है जो विपत्ति के समय काम आए। स्वार्थी मित्र से हमेशा दूर रहो।

**(ग) संकेत-बिंदु–**

• एक जंगल में एक शेर का रहना • दोपहर को एक पेड़ के नीचे आराम करना • अचानक एक चूहे का उसके ऊपर कूदने लगना • नींद टूटने से शेर का क्रोधित होना • चूहे को जान से मारने की धमकी देना • भय से काँपते हुए चूहे के द्वारा शेर से छोड़ने के लिए विनती करना • भविष्य में शेर के काम आने की बात कहना • शेर द्वारा उसका मज़ाक उड़ाते हुए छोड़ देना • शिकार ढूँढ़ते हुए शेर का शिकारी द्वारा बिछाए जाल में फँस जाना • दहाड़ना • कुछ न कर पाना • दहाड़ सुनकर चूहे का आना • जाल को काट देना • शेर का आज़ाद होकर चूहे का आभार व्यक्त करना • शिकारी के आने से पहले दोनों का वहाँ से चले जाना।

**लघु कथा–**

एक जंगल में एक शेर रहता था। एक दिन दोपहर को वह एक पेड़ के नीचे आराम कर रहा था। अचानक एक चूहा उसके ऊपर आकर कूदने लगा। इससे शेर की नींद टूट गई। अपने ऊपर चूहे को देखकर वह बहुत क्रोधित हुआ और गरजकर बोला–"तेरी यह हिम्मत! मैं अभी तुझे जान से मार दूँगा।"

बेचारा चूहा भय से काँपने लगा। उसने शेर से विनती की–"महाराज, मुझे मत मारिए। मुझे छोड़ दीजिए। वैसे तो मैं बहुत छोटा और दुर्बल हूँ, मगर मैं वादा करता हूँ कि आपका एहसान जीवन भर न भूलूँगा। कभी मौका मिला तो आपकी मदद अवश्य करूँगा।" उसकी बात पर शेर हँसते हुए बोला–"तुम जैसा बहुत ही कमज़ोर और छोटा जीव, मेरी क्या मदद करेगा? चलो तुम कह रहे हो तो मैं तुम्हें माफ करता हूँ।" यह कहकर शेर ने चूहे को छोड़ दिया।

एक दिन की बात है, किसी शिकारी ने जंगल में जाल बिछा रखा था। शेर शिकार की तलाश में जंगल में भटक रहा था कि शिकारी के जाल में फँस गया। घबराकर वह दहाड़ने लगा। मगर जाल बहुत मज़बूत था। बेचारे शेर की एक न चली। जाल तोड़कर बाहर निकलना उसके लिए संभव नहीं था। चूहे ने दूर से शेर की दहाड़ सुनी तो वह भागकर शेर के पास पहुँचा और उसने देखते-ही-देखते उस जाल को कुतर दिया। जाल के कटते ही शेर उससे आज़ाद हो गया। जाल से

बाहर आकर शेर ने चूहे का आभार व्यक्त किया और उसे धन्यवाद दिया। फिर वे दोनों शिकारी के आने से पहले वहाँ से चले गए।

**शीर्षक–** शेर और चूहा

**शिक्षा–** कभी किसी भी जीव को छोटा और कमज़ोर नहीं समझना चाहिए। हर प्राणी की कोई-न-कोई उपयोगिता होती है।

**(घ) संकेत-बिंदु–**

• नदी के किनारे एक जामुन के पेड़ पर एक बंदर • नदी में रहने वाले मगरमच्छ से उसकी मित्रता होना • मगरमच्छ को खाने के लिए जामुन देते रहना • एक दिन मगरमच्छ द्वारा कुछ जामुन अपनी पत्नी को खिलाना • पत्नी का सोचना कि स्वादिष्ट जामुन खाने वाले बंदर का कलेजा मीठा होना • अपने पति से बंदर का दिल लाने की ज़िद करना • मगरमच्छ द्वारा बंदर को भोजन पर निमंत्रित करना • अपनी पीठ पर बंदर को बैठाकर ले चलना • नदी के बीचोंबीच पहुँचकर भेद खोलना • बंदर द्वारा धैर्य न खोना • पेड़ की खोखल में दिल को सँभालकर रखने की कहानी बताना • दिल लाने हेतु वापस चलने के लिए कहना • मगरमच्छ द्वारा बंदर को वापस लाना • बंदर का उछलकर पेड़ पर वापस पहुँचना • मगरमच्छ से दोस्ती समाप्त करना।

**लघु कथा–**

एक नदी के किनारे एक जामुन के पेड़ पर एक बंदर रहता था। उसकी मित्रता उसी नदी में रहने वाले मगरमच्छ से हो गई थी। बंदर रोज़ पेड़ से तोड़कर मीठे-मीठे जामुन खाता था और मगरमच्छ को भी खाने के लिए देते रहता था। एक दिन उस मगरमच्छ ने कुछ जामुन लेकर अपनी पत्नी को भी खिलाए। स्वादिष्ट जामुन खाने के बाद उसकी पत्नी ने सोचा–'जब जामुन इतने स्वादिष्ट हैं तो इन जामुनों के खाने वाले बंदर का दिल कितना मीठा होगा'। उसके दिल में बंदर का कलेजा खाने की इच्छा पैदा हुई और अपने पति से उस बंदर का दिल लाने की ज़िद की।

मगरमच्छ ने उसे बहुत समझाया पर वह न मानी। पत्नी के हाथों मजबूर हुए मगरमच्छ ने बंदर से जाकर कहा कि उसकी भाभी उससे मिलना चाहती है। उसने उसको भोजन पर बुलाया है। बंदर ने कहा कि वह पानी में कैसे जा सकता है तो मगरमच्छ ने कहा कि वह उसे अपनी पीठ पर बैठाकर ले चलेगा। अपने मित्र की बात का भरोसा कर, बंदर पेड़ से नदी में कूदा और उसकी पीठ पर सवार हो गया। जब वे नदी के बीचोंबीच पहुँचे तब मगरमच्छ ने भेद खोलते हुए कहा कि उसकी पत्नी उसका दिल खाना चाहती है इसलिए वह उसको अपने साथ ले जा रहा है।

मगरमच्छ की बात सुनकर बंदर को बहुत धक्का लगा, लेकिन उसने अपना धैर्य नहीं खोया और बोला–"ओह, तुमने यह बात मुझे पहले क्यों नहीं बताई थी

क्योंकि, मैंने तो अपना दिल जामुन के पेड़ की खोखल में सँभालकर रखा हुआ है। पहले ही बता देते तो मैं अपनी भाभी के लिए वहीं निकालकर दिल दे देता। अब जल्दी से मुझे वापस नदी के किनारे ले चलो ताकि मैं अपना दिल लाकर अपनी भाभी को उपहार में देकर; उसे खुश कर सकूँ।" मूर्ख मगरमच्छ बंदर को जैसे ही नदी किनारे लेकर आया, बंदर ने जल्दी से जामुन के पेड़ पर छलाँग लगाई और क्रोध में भरकर भोला–"अरे मूर्ख, दिल के बिना भी क्या कोई ज़िंदा रह सकता है? तूने मित्रता में धोखा किया है। जा, आज से तेरी-मेरी दोस्ती समाप्त।"

**शीर्षक–** बंदर और मगरमच्छ

**शिक्षा–** मुसीबत के क्षणों में कभी भी धैर्य नहीं खोना चाहिए तथा मित्रता का सदैव सम्मान करना चाहिए।

## 2. शीर्षक के आधार पर लघु कथा-लेखन विधि

### (क) शीर्षक– अभ्यास की शक्ति

**लघु कथा–**

प्राचीन भारत में एक बालक था। वह पढ़ाई-लिखाई में बहुत कमज़ोर था। जब वह पाँच वर्ष का था, तभी वह गुरुकुल शिक्षा के लिए आ गया। दस वर्ष बीत जाने के बाद भी वह आगे नहीं बढ़ पाया। सभी साथी उसका मज़ाक उड़ाते हुए उसे वरदराज, (बैलों का राजा) कहा करते थे। एक दिन गुरु जी ने उसे अपने पास बुलाया और कहा, "बेटा वरदराज" तुम किसी और काम में ज़्यादा सक्षम हो सकते हो, इसलिए अपना समय नष्ट मत करो और घर जाओ। कुछ और काम करो।" गुरु जी की बात से वरदराज को बहुत ही दुख पहुँचा। उसने विद्या विहीन होने से जीवन को खत्म करना बेहतर समझा। यह गुरुकुल से चला गया और आत्महत्या करने का उपाय सोचने लगा। रास्ते में उसे एक कुआँ दिखाई दिया। वहाँ महिलाएँ रस्सी से पानी निकाल रही थीं। वह वहीं बैठ गया। तब उसने देखा कि रस्सी के आने-जाने के कारण पत्थर पर निशान पड़ गए हैं। वरदराज ने सोचा कि जब इतना कठोर पत्थर, कोमल रस्सी के बार-बार रगड़ने से घिस सकता है, तो परिश्रम करने से मुझे विद्या क्यों नहीं प्राप्त हो सकती?

उसने आत्महत्या का विचार त्याग दिया और गुरुदेव के पास लौट आया। उसने गुरुदेव से कुछ दिन और रखकर शिक्षा देने की प्रार्थना की। सरल हृदय से गुरुदेव राजी हो गए। अब वरदराज ने मन लगाकर अध्ययन करना आरंभ किया। उसमें ज्ञान प्राप्त करने की इच्छा इतनी प्रबल हो गई थी कि उसे न अपने खाने-पीने का ध्यान रहता और न ही समय का।

यही वरदराज आगे चलकर संस्कृत के महान विद्वान बनें। लोगों को संस्कृत आसानी से समझ में आए इस बात को ध्यान में रखकर उन्होंने 'लघु सिद्धांत

कौमुदी' की रचना की, जो संस्कृत का महान ग्रंथ है। यह ग्रंथ पाणिनी के व्याकरण का संक्षिप्त सार है। वरदराज की कहानी से निम्नलिखित लोकोक्ति प्रचलित हो गई जो कहानी की शिक्षा को चरितार्थ करती है–

करत-करत अभ्यास के जड़मति होत सुजान।
रसरी आवत-जात ते, सिल पर परत निसान।।

**शिक्षा–** अभ्यास सफलता का मूलमंत्र है।

**(ख) शीर्षक– जैसे को तैसा**

**लघु कथा–**

एक गाँव में जीर्णधन नामक गरीब लड़का रहता था। धन कमाने की दृष्टि से उसने परदेश जाने का विचार किया। उसके पास कोई धन-दौलत तो थी नहीं, केवल एक बहुत भारी लोहे की तराजू थी। उस तराजू को गाँव के महाजन के पास धरोहर के रूप में रखकर वह परदेश चला गया। परदेश से आने के बाद उसने महाजन से अपनी धरोहर वापस माँगी। महाजन ने कहा, "उस तराजू को तो चूहे खा गए।"

लड़का समझ गया कि महाजन उसकी तराजू देना नहीं चाहता, लेकिन वह कुछ कर भी तो नहीं सकता था। उसने महाजन से कहा, "कोई बात नहीं इसमें आपकी कोई गलती नहीं है। सब चूहों का दोष है।" यह कहकर वह बिना कुछ कहे अपने घर चला गया। अगले दिन वह महाजन के पास जाकर बोला, "सेठ जी! मैं नदी पर स्नान करने के लिए जा रहा हूँ। आप अपने पुत्र को मेरे साथ भेजना चाहें तो भेज सकते हैं। वह भी नदी में स्नान कर लेगा।" महाजन लड़के की सज्जनता से बहुत प्रभावित था, इसलिए उसने अपने पुत्र को उसके साथ स्नान के लिए भेज दिया। जीर्णधन ने महाजन के पुत्र को वहाँ से कुछ दूर ले जाकर एक गुफा में छुपा दिया और फिर महाजन के पास पहुँचा। महाजन ने पूछा–"मेरा बेटा भी तो तुम्हारे साथ स्नान के लिए गया था, वह कहाँ है?"

जीर्णधन ने कहा, "उसे तो चील उठा ले गई।"

महाजन–"यह कैसे हो सकता है? कभी चील भी इतने बड़े बच्चे को उठाकर ले जा सकती है?"

जीर्णधन–"यदि चूहे लोहे की तराजू को खा सकते हैं तो चील भी बच्चे को उठाकर ले जा सकती है।" महाजन को अपनी भूल का अहसास हो चुका था, उसने जीर्णधन से माफी माँगते हुए तराजू वापस कर दी। तराजू मिल जाने पर उसने महाजन के बेटे को भी गुफा से लाकर लौटा दिया।

**शिक्षा–** जो जैसा करता है उसके साथ वैसा ही करना चाहिए। (पंचतंत्र से)

**3. शिक्षा के आधार पर लघु कथा-लेखन विधि**

**(क) शिक्षा– केवल बुद्धिमान को सीख दो, मूढ़ को नहीं**

**लघु कथा–**

एक जंगल के एक घने वृक्ष पर गौरैया का एक जोड़ा रहता था। उन्होंने अपना घोंसला उस वृक्ष की घनी डाली पर बना रखा था। वे दोनों अपने घोंसले में बड़े सुख से रहते थे।

सर्दियों का मौसम शुरू हो गया था। एक दिन सुबह ठंडी हवा चल रही थी और साथ में बूँदा-बाँदी भी शुरू हो गई थी। उस समय एक बंदर ठिठुरता हुआ उस वृक्ष की शाखा पर आ बैठा। ठंड की वज़ह से उसका सारा शरीर काँप रहा था और उसके दाँत कटकटा रहे थे। उसे देखकर गौरैया ने कहा, "अरे! तुम कौन हो? देखने में तो तुम्हारा चेहरा आदमियों जैसा लगता है। तुम्हारे तो हाथ-पैर भी हैं। फिर भी तुम यहाँ बैठे हो, अपना घर बनाकर क्यों नहीं रहते?"

यह सुनकर बंदर गुस्से में बोला, "तू चूप रह और अपना काम कर। मेरा उपहास क्यों कर रही है?"

गौरैया ने कहा, "अगर तुमने भी अपना घर बनाया होता तो आज इस तरह मारे-मारे न फिर रहे होते। देखो, तुम्हारा पूरा शरीर गीला हो चुका है और सारा बदन भी ठंड से काँप रहा है।" इस तरह से गौरैया बंदर को ताने देते हुए कुछ-न-कुछ कहती रही।

गौरैया की बातों से बंदर बुरी तरह झल्ला गया। क्रोध में आकर बोला, "तू कौन होती है मुझे उपदेश और सीख देने वाली। तू अपने जिस घर को लेकर इतरा रही है मैं उसे ही नष्ट कर देता हूँ।" यह कहकर बंदर ने बेचारी गौरैया के घोंसले को तोड़-फोड़ दिया।

इसीलिए कहा गया है कि बुद्धिमान् को दी गई शिक्षा ही फलदायक होती है, मूर्ख को दी हुई शिक्षा का परिणाम कई बार विपरीत भी हो सकता है।

(पंचतंत्र से)

**शीर्षक–** गौरैया और बंदर

**(ख) शिक्षा– बिना विचारे जो करे सो पाछे पछताय।**

**लघु कथा–**

देववर्मा नामक एक ब्राह्मण था। उसके घर जिस दिन पुत्र का जन्म हुआ, उसी दिन उसके घर में रहने वाली नकुली ने भी एक नेवले को जन्म दिया। देववर्मा की पत्नी बहुत दयालु स्वभाव की स्त्री थी। उसने उस नवजात नेवले को भी अपने पुत्र के समान ही पाल-पोसकर बड़ा किया।

वह नेवला सदा उसके पुत्र के साथ खेलता था। दोनों में बड़ा प्रेम था। देववर्मा की पत्नी भी दोनों के प्रेम को देखकर प्रसन्न रहती थी। किंतु, कभी-कभी उसके मन में यह शंका भी उठती रहती थी कि कभी यह नेवला उसके पुत्र को काट न खाए क्योंकि नेवला एक पशु ही तो था।

एक दिन देववर्मा की पत्नी अपने पुत्र को सुलाकर पास के तालाब से पानी भरने गई। जाते समय उसने अपने पति से कहा कि वह बच्चे का ध्यान रखे। कहीं ऐसा न हो कि नेवला उसे काट खाए। पत्नी के जाने के बाद देववर्मा थोड़ी देर तक तो बच्चे के पास बैठा रहा, पर थोड़ी देर बाद भिक्षा के लिए बाहर निकल गया। उसके जाने के बाद वहाँ एक काला नाग कहीं से आ गया। नेवले ने उसे देख लिया। उसे लगा कि कहीं यह नाग उसके मित्र को न डस ले, इसलिए वह उस नाग पर टूट पड़ा और स्वयं बहुत क्षत-विक्षत होते हुए भी उसने नाग के टुकड़े-टुकड़े कर दिए। नाग को मारने के बाद वह उसी दिशा में चल पड़ा, जिधर देववर्मा की पत्नी गई थी। उसने सोचा कि वह उसकी इस बहादुरी की प्रशंसा करेगी, किंतु हुआ इसके विपरीत।

नेवले के मुँह पर लगे खून को देखकर देववर्मा की पत्नी को लगा कि इस नेवले ने उसके पुत्र को मार दिया है। यह विचार आते ही वह क्रोध से भर गई और अपने सिर पर रखे घड़े को नेवले पर फेंक दिया। छोटा-सा नेवला जल से भरे घड़े की चोट से वहीं मर गया। ब्राह्मण-पत्नी जब घर पहुँची तो उसने देखा कि उसका पुत्र बड़े आराम से सो रहा है और उससे कुछ दूरी पर एक काले नाग का शरीर टुकड़े-टुकड़े हुआ पड़ा है। तब उसे अपनी ग़लती का अहसास हुआ। जिस नेवले ने नाग से उसके पुत्र की जान बचाई थी, उसने उसी बेचारे की जान ले ली। जब उसका पति घर वापस आया तो उसने उसको रोते-रोते सारी घटना बताई। नेवले की मृत्यु से उसका मन बहुत आहत था। देववर्मा ने उससे यही कहा कि बिना विचारे जो काम किया जाता है उसका ऐसा ही परिणाम होता है। अत: हर काम सोच-समझकर ही करना चाहिए। (पंचतंत्र से)

**शीर्षक–** ब्राह्मणी और नेवला

**3. शीर्षक और शिक्षा के आधार पर लघु कथा-लेखन विधि**

**(क) शीर्षक– बगुला भगत और केकड़ा**

**शिक्षा–** बिना सोचे-समझे किसी पर आँख बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए।

**लघु कथा–**

एक जंगल में एक बहुत बड़ा तालाब था। इसमें नाना प्रकार के जीव, पक्षी, मछलियाँ, कछुए और केकड़े आदि रहते थे। वहीं एक बगुला भी रहता था, जिसे परिश्रम करना बिलकुल अच्छा नहीं लगता था। हमेशा यही उपाय सोचता रहता था कि कैसे बिना हाथ-पैर हिलाए रोज भोजन मिल जाया करे। एक दिन उसे एक उपाय सूझ ही गया। वह तालाब के किनारे खड़े होकर नकली आँसू बहाने

लगा। एक केकड़े ने उसे आँसू बहाते देखा तो कारण पूछा। बगुला बोला, "बेटे, बहुत कर लिया मछलियों का शिकार। अब मैं यह पाप-कर्म और नहीं करना चाहता। मेरी आत्मा जाग उठी है। केकड़ा बोला, "मामा, शिकार नहीं करोगे, कुछ खाओगे नहीं तो ज़िंदा कैसे रहोगे?" बगुले ने लंबी साँस ली और बोला, "वैसे भी हम सबको जल्दी मरना ही है। मुझे पता चला है कि शीघ्र ही यहाँ बारह वर्ष का लंबा सूखा पड़ेगा और उसमें कोई नहीं बचेगा। यह बात मुझे एक त्रिकालदर्शी महात्मा ने बताई है। महात्माओं की भविष्यवाणी कभी ग़लत नहीं होती।" केकड़े ने जाकर सबको बताया कि कैसे बगुले ने अहिंसा का मार्ग अपना लिया है और सूखा पड़ने वाला है। यह सुनते ही उस तालाब के सारे जीव दौड़े-दौड़े बगुले के पास आए और बोले–"भगत मामा, अब तुम्हीं हमें बचाव का कोई रास्ता बताओ।"

बगुला बोला, "यहाँ से थोड़ी दूर पर एक जलाशय है, जिसमें पहाड़ी झरना बहकर गिरता है। वह कभी नहीं सूखता। यदि तुम सब लोग वहाँ चले जाओ तो बचाव हो सकता है।" "पर हम लोग वहाँ जाएँगे कैसे?" सभी जीवों ने पूछा। तब बगुला बोला, "तुम लोग चिंता मत करो। मैं तुम्हें एक-एक करके अपनी पीठ पर बिठाकर वहाँ तक ले जाऊँगा क्योंकि मैं तो अपना शेष जीवन दूसरों की सेवा में बिताना चाहता हूँ।" सभी जीव खुश हो गए और बगुला भगत की जय-जयकार करने लगे। अब बगुला रोज़ एक जीव को अपनी पीठ पर बिठाकर ले जाता और कुछ दूर ले जाकर एक चट्टान के पास जाकर उसे मारकर खा जाता। धीरे-धीरे चट्टान के पास मरे हुए जीवों की हड्डियों का ढेर बढ़ने लगा और बगुले की सेहत बनने लगी। वह खा-खाकर खूब मोटा हो गया। बहुत दिनों तक ऐसा ही चलता रहा। एक दिन केकड़े ने बगुले से कहा–"मामा, तुमने इतने सारे जानवर उस तालाब तक पहुँचा दिए, लेकिन मेरी बारी अभी तक नहीं आई।"

बगुले–"बेटा, आज तेरी ही बारी है, आ जा मेरी पीठ पर बैठ जा।"

केकड़ा खुश होकर बगुले की पीठ पर बैठ गया। जब वह चट्टान के निकट पहुँचा तो ऊपर से हड्डियों का ढेर देखकर केकड़े का माथा ठनका। उसे सारी बात समझते देर न लगी। वह सिहर उठा परंतु उसने हिम्मत नहीं हारी और तुरंत अपने नुकीले पंजों से दुष्ट बगुले की गर्दन दबा दी और तब तक दबाए रखी, जब तक उसके प्राण न निकल गए। फिर केकड़ा बगुले का कटा सिर लेकर तालाब पर लौटा और सारे जीवों को सच्चाई बताई कि कैसे दुष्ट बगुला उन्हें धोखा देता रहा था।

इस तरह इस लघु कथा से यही शिक्षा मिलती है कि बिना सोचे-समझे किसी पर आँखें बंद करके विश्वास नहीं करना चाहिए। (पंचतंत्र से)

**(ख) शीर्षक– मूर्ख बातूनी कछुआ**

**शिक्षा–** जो अपनी वाचालता पर नियंत्रण नहीं रख पाता है, उसका परिणाम बुरा होता है।

**लघु कथा–**

किसी तालाब में कुंबुग्रीव नामक एक कछुआ रहता था। उसी तालाब के किनारे संकट और विकट नामक दो हंस भी रहते थे। इन दोनों से कछुए की गहरी दोस्ती थी। कछुआ बहुत बातूनी था। उसे बातें करने में बहुत मज़ा आता था। वह हर रोज़ पानी से निकलकर तालाब के किनारे आ जाता था और दोनों हंसों के साथ बातें करता था। एक वर्ष उस प्रदेश में सूखा पड़ा। ज़रा भी बारिश नहीं हुई, जिसके कारण धीरे-धीरे वह तालाब भी सूखने लगा। हंसों को अपनी चिंता न थी। वे तो उड़कर कहीं और भी जा सकते थे, पर वे अपने दोस्त कछुए को लेकर चिंतित थे। जब उन्होंने अपनी चिंता के बारे में कछुए को बताया तो वह बोला, "भाई, चिंता करने से क्या होगा। तुम लोग उड़कर किसी ऐसे तालाब की खोज करो जो पानी से लबालब भरा हो।" कछुए की बात सुनकर संकट नामक हंस ने कहा, "तालाब मिल भी गया तो तुम वहाँ कैसे जाओगे?" कछुआ बोला, "तुम लोग मुझे किसी लकड़ी के टुकड़े से लटकाकर ले चलना।" कछुए की बात दोनों को भी उचित लगी।

हंसों ने वहाँ से थोड़ी दूर पर तालाब की खोज कर ली। उन्होंने कछुए से कहा, "उड़ान के दौरान तुम्हें अपना मुँह बंद रखना होगा।" कछुए ने उन्हें भरोसा दिलाया कि वह किसी भी हालत में अपना मुँह नहीं खोलेगा।

कछुए ने लकड़ी के टुकड़े को अपने दाँतों से कसकर पकड़ लिया और फिर दोनों हंस उसे लेकर उड़ चले। रास्ते में नगर के लोगों ने जब देखा कि एक कछुआ आकाश में उड़ा जा रहा है तो वे आश्चर्य से चिल्लाने लगे। लोगों को चिल्लाते हुए देखकर कछुए से रहा नहीं गया। वह अपना वादा भूल गया। उसने कुछ कहने के लिए जैसे ही अपना मुँह खोला कि आकाश से सीधा ज़मीन पर आकर गिरा और चोट अधिक लगने के कारण उसकी मृत्यु हो गई।

लघु कथा इस शिक्षा को चरितार्थ करती है कि व्यक्ति को अपनी वाचालता पर नियंत्रण रखना चाहिए। जो ऐसा नहीं करता तो उसका बुरा होता है। (पंचतंत्र से)

## अभ्यास-कार्य

**1. दिए गए संकेत-बिंदुओं के आधार पर लघु कथा लिखिए और उसका उचित शीर्षक तथा उससे मिलने वाली शिक्षा भी लिखिए।**

**(क) संकेत-बिंदु–**

• किसी गाँव के मंदिर में एक साधु • गाँव के लोगों से उसे दान में तरह-तरह के वस्त्र, उपहार, खाद्य-सामग्री और पैसे मिलना • उनको बेचकर काफी धन जमा कर लेना • साधु का किसी पर विश्वास न होना • अपने धन को एक पोटली में रखना • पोटली सदा अपने साथ रखना • उसी गाँव में एक ठग का आना • उसकी नज़र साधु के धन पर होना • शिष्य के वेश में ठग का साधु के पास आना • शिष्य बनाने की प्रार्थना करना • साधु का मान जाना • ठग का भी साधु के साथ रहना • मंदिर की साफ़-सफ़ाई आदि सभी कार्य करना • साधु का विश्वासपात्र बन जाना • एक दिन साधु के साथ पास के गाँव के मुखिया के घर पर जाना • रास्ते में नदी पर साधु का स्नान करने जाना • ठग का गठरी लेकर चंपत हो जाना।

**(ख) संकेत-बिंदु–**

• एक दिन एक सियार का किसी गाँव से गुज़रना • गाँव के बाज़ार के पास लोगों को देखना • वहाँ दो तगड़े बकरों की आपस में लड़ाई होना • सभी लोगों का ज़ोर-ज़ोर से चिल्लाना और तालियाँ बजाना • दोनों बकरों का बुरी तरह से लहूलुहान होना और सड़क पर खून बहाना • इतना सारा ताज़ा खून देखकर अपने-आप को न रोक पाना • खून का स्वाद लेने के लिए बकरों पर टूट पड़ना • सियार को देखकर बकरों के द्वारा अपनी शत्रुता भूल जाना • मिलकर सियार पर हमला बोल देना • सियार को वहीं मार देना।

**(ग) संकेत-बिंदु–**

• हिमालय की एक कंदरा में एक बलिष्ठ शेर का रहना • एक दिन एक भैंसे का शिकार कर अपनी गुफ़ा में लौटना • रास्ते में एक मरियल-सा सियार का मिलना • सियार द्वारा शेर को दंडवत प्रणाम करना • शेर द्वारा ऐसा करने का कारण पूछना • शेर से अपनी शरण में लेने की प्रार्थना करना • शेर की सेवा करने का आश्वासन देना • शेर का उसकी बात मान लेना • कुछ ही दिनों में शेर द्वारा छोड़े शिकार को खा-खाकर बहुत मोटा हो जाना • एक दिन शेर से

अपने शक्तिशाली होने का दंभ भरना • हाथी का शिकार करने की बात कहना • शेर द्वारा समझाना • घमंड के कारण न मानना • पहाड़ की चोटी से हाथियों के झुंड को देखना • शेर की तरह गर्जना करते हुए एक बड़े हाथी के ऊपर कूद पड़ना किंतु हाथी के सिर के ऊपर गिरते हुए उसके पैरों पर जा गिरना • हाथी का अपनी मस्तानी चाल से चलते हुए उसके सिर पर पैर रखकर बढ़ जाना • सियार का सिर चकनाचूर हो जाना • प्राण पखेरू उड़ जाना।

**(घ) संकेत-बिंदु–**

• जंगल के एक बड़े वट-वृक्ष की खोल में बहुत से बगुलों का रहना • उसी वृक्ष की जड़ में एक साँप का रहना • चुपचाप बगुलों के बच्चों को खा जाना • एक बगुले का बहुत दुखी होकर नदी किनारे जाकर बैठना • आँखों के आँसू देखकर एक केकड़े द्वारा रोने का कारण पूछना • पूरी घटना बताना और उपाय पूछना • केकड़े का ऐसा उपाय बताना, जिससे साँप के साथ-साथ बगुलों का भी नाश हो जाना क्योंकि बगुले उसके जन्मजात शत्रु • नेवले के बिल से शुरू करके साँप के बिल तक मांस के टुकड़े बिखरने की सलाह देना • बगुले का ऐसा ही करना • नेवले द्वारा साँप के साथ-साथ उस वृक्ष पर रहने वाले सभी बगुलों को भी खा जाना • बगुले द्वारा उपाय के बारे में सोचना पर दुष्परिणाम के बारे में न सोचना • अपनी मूर्खता का फल पाना।

**(ङ) संकेत-बिंदु–**

• एक जंगल में विशाल वृक्ष के तने के खोल में कपिंजन नामक तीतर का रहना • एक दिन अपने साथियों के साथ दूर धान के खेत में नई-नई कोंपलें खाने चले जाना • रात को उस वृक्ष की खोल में एक खरगोश का आकर रहने लगना • कुछ दिन बाद तीतर का लौटना • खरगोश को अपनी जगह खाली करने को कहना • खरगोश द्वारा न निकलना • खरगोश के द्वारा तर्क देना कि घर में रहने वाले का घर पर अधिकार होना • झगड़ा बढ़ जाना • तीतर का किसी अन्य से फैसला करवाने की बात कहना • एक बिल्ली का यह सब सुनना • दोनों को खा जाने के इरादे से पंच बनने की बात सोचना • हाथ में माला लेकर सूर्य की ओर मुख करके नदी के किनारे कुशासन बिछाकर आँखें बंद कर बैठ जाना और धर्म का उपदेश देना • दोनों का पाखंडी बिल्ली से समझौता कराने की बात कहना • जिसका पक्ष धर्म-विरुद्ध हो उसे खा लेने की बात बिल्ली द्वारा कहना • दोनों के द्वारा बिल्ली का प्रस्ताव स्वीकार कर लेना • पास आकार समस्या बताने की बात दोनों से कहना • झपट्टा मारकर दोनों को एक साथ ही पंजों में दबोच लेना।

**2. निम्नलिखित शीर्षकों के आधार पर लघु कथा और उससे मिलने वाली शिक्षा को लिखिए।**

**(क) शीर्षक–** एकता में बल

**(ख) शीर्षक–** लालच बुरी बला है

**3. शीर्षक देते हुए ऐसी लघु कथाएँ लिखिए, जिनसे निम्नलिखित शिक्षाएँ मिलती हों।**

**(क) शिक्षा–** घोर संकट की परिस्थितियों में भी हमें सूझ-बूझ और चतुराई से काम लेना चाहिए और आखिरी दम तक प्रयास करते रहना चाहिए।

**(ख) शिक्षा–** भाग्य भी उन्हीं का साथ देता है जो कर्म में विश्वास रखते हैं जबकि भाग्य के भरोसे हाथ-पर-हाथ बैठे रहने वाले का विनाश होता है।

**(ग) शिक्षा–** मूर्ख मित्र की अपेक्षा विद्वान शत्रु ज्यादा अच्छा होता है।

**(घ) शिक्षा–** किसी झूठ को बार-बार बोलने से वह सच की तरह लगने लगता है। अत: दिमाग से काम लें और अपने-आप पर विश्वास करें।

**4. निम्नलिखित शीर्षकों एवं शिक्षाओं के आधार पर लघु कथाएँ लिखिए।**

**(क) शीर्षक–** कुमार्ग

**शिक्षा–** अपने हित के लिए गलत कर्मों का मार्ग नहीं अपनाना चाहिए।

**(ख) शीर्षक–** ले डूबती है आपस की शत्रुता

**शिक्षा–** अपनों से बदला लेने के लिए जो शत्रु का साथ लेता है, उसका अंत निश्चित है।

❑❑❑